आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:30-09-14

हमें सतयुग आदि और कलियुग अन्त का कोन्टरास्ट बताकर, मनुष्य से देवी-देवता बनने का उमंग-उत्साह देने बाले, बेहद के टीचर - शिवबाबा ने कहा, "मीठे बच्चे - तुम बेहद के बाप के पास आये हो विकारी से निर्विकारी बनने, इसलिए तुम्हारे में कोई भी भूत नहीं होना चाहिए."

यह तो हम सब जानते है की बाबा हमें क्या पढ़ा रहे हैं? बाबा अभी हम आत्माओं को स्वराज्य अधिकारी बनने की पढ़ाई पढ़ा रहे है जिसे हम आत्माये राजा बन जायेंगी. किसकी? अपनी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों की. अगर हम आत्माये अभी स्वराज्य अधिकारी बनी तो भविष्य स्वर्ग में भी राजा बनेंगी.

हमारी आत्मा स्वराज्य अधिकारी बने इसके लिए हमें प्रैक्टिस करनी हैं - आत्म-अभिमानी बनने की. और फिर सतयुग में देवी-देवता पद प्राप्ति के लिए दैवी-गुण भी धारण करने हैं, मुख्य दैवी-गुण हैं - पवित्रता, संतुष्टता, धैर्यता और रमणीकता.

आत्म-अभिमानी बनने की और दैवी-गुणों को धारण करने की यह पढ़ाई हम उमंग-उत्साह में रहकर पढ़े इसके लिए बाबा ने आज सारी मुरली में कलियुग के अन्त (अभी की दुनिया) और सतयुग आदि (आने वाली दुनिया) का अन्तर बताया हैं. जिसे हम समझ सके की आनेवाली सतयुगी दुनिया में कितना सुख हैं और उसमें जाने के लिए हम प्रोत्साहित होकर ईश्वरीय पढ़ाई को पढ़े.

- यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया अथवा विकारी दुनिया. वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया अथवा कहे निर्विकारी दुनिया.

- अभी है पुरानी दुनिया, पुराना भारत. जब भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तब उसे नई दुनिया, नया भारत कहा जाता था.

- यह रावण हैं भारत का आधाकल्प का दुश्मन, जब मनुष्य में पांच विकार (भूत) प्रवेश करते हैं. इन देवताओं में यह भूत नहीं थे.

- द्वापर-कलियुग को कहा जाता है रावण राज्य. सतयुग-त्रेता को कहा जाता है राम-राज्य.

- यह है अपार दुखो की दुनिया, वह है अपार सुखों की दुनिया.

- कलियुग है दुखधाम, सतयुग है सुखधाम.

- विकार में जाना माना एक-दो पर काम-कटारी चलाना, यह है रावण की रचना. सतयुग है भगवान की रचना, वहाँ काम-कटारी होती ही नहीं.

- यह है रावण का दुख का वर्सा, वहाँ है भगवान का सुख का वर्सा.

- अभी है भारत १०० प्रतिशत इनसोलवन्ट, फिर सतयुग में होगा १०० प्रतिशत सोलवन्ट - यह खेल बना हुआ हैं.

- अभी साईन्स घमंडीओं से माया का कितना पॉम्प हैं. तो इसे कहा जाता है रावण का स्वर्ग. भगवान के स्वर्ग को कहाँ जाता है सतयुग, जहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा.

- अभी रावण राज्य में सब हैं झूठ बोलने वाले. गॉड़ फादर ही सचखंड की स्थापना करते हैं. वहाँ झूठ की बात ही नहीं होती.

- अभी है आसुरी राज्य, सतयुग-त्रेता में है ईश्वरीय राज्य. जो अब स्थापन हो रहा हैं.

- यहाँ सब है नर्कवासी पतित, फिर सतयुग में होंगे सब पावन.

- यहाँ भल धन है परन्तु बीमारियां आदि भी हैं. वह हैप्पीनेस रह न सके. कुछ न कुछ दुख रहता है. वहाँ तुम्हें हेल्थ, वैल्थ, हैप्पीनेस सबकुछ मिल जाता हैं. उनका नाम ही है सुखधाम, स्वर्ग, पैरेडाइज.

ॐ शांति.